डॉ. आर पी सारस्वत

नानी का गाँव

नानी के गाँव चलें
बड़ा मज़ा आएगा

मामा के संग -संग
घूमेंगे खेत में
बम्बा की पटरी पर
दोड़ेंगे रेत में
नंगे ही पाँव चलें
बड़ा मज़ा आएगा

डाल -डाल कर धमाल
ख़ूब खेल खेलेंगे
खट -मीठे आम तोड़
झोले में ले लेंगे
धूप है कि छाँव चलें
बड़ा मज़ा आएगा

नानी से बैठ सभी
सुनेंगे कहानी हम
एक दो नहीं, हर-दिन
पाँच,सात कम से कम
चाहे जो दाँव चलें
बड़ा मज़ा आएगा

नानी के गाँव चलें
बड़ा मज़ा आएगा।।

चटोरी चिड़िया

चिड़िया बड़ी चटोरी अम्मा,
चिड़िया बड़ी चटोरी ।
खा,पी करके फुर्र हो गई
खाली पड़ी कटोरी अम्मा,
चिड़िया बड़ी चटोरी ।

हलवा खाया, पूरी खाई,
खाई चावल मक्का,
थाली में की खीर चट्ट की,
रहे देखते कक्का,
खाती रही सामने सबके,
करी न बिल्कुल चोरी अम्मा,
चिड़िया बड़ी चटोरी ।

सब कुछ खाकर नल पर पहुँची,
गट -गट पीने पानी,
पानी पीकर झट उड़ने की
उसने मन में ठानी,
फिर भी कुटक -कुटक कर खाई
झट गन्ने की पोरी अम्मा,
चिड़िया बड़ी चटोरी ।

मुझको भी उड़ना सिखला दे,
मेरे पंख लगा दे,
मैं भी उड़ूँ,हाथ ना आऊँ,
चिड़िया मुझे बना दे,
अभी बना दे मुझको चिड़िया,
करूँ प्रार्थना तोरी अम्मा,
चिड़िया बड़ी चटोरी।।

 ISSN:2583-8849